फ़िलिप्पियों

लेखकः

यीशु मसीह का प्रेरित, पौलुस

समयः

यीशु के आने के लगभग 60 साल के बाद

विषयः

अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस ने इस चर्च की स्थापना की थी (प्रे.काम 16:12-40) खुशी के समाचार को सुनाने के कारण उसे सताया गया। इस समय वह जेल में था। फिर इस पत्र में खुशी या आनन्द शब्द कई बार आए हैं। हालांकि पौलुस ने अनेक कठिनाइयों और समस्याओं का सामना किया, लेकिन न ही निराश हुआ, न ही किसी तरह की शिकायत की। वह स्वंय आनन्दित था और दूसरों को भी खुश देखना चाहता था। दूसरा विषय है-सुसमाचार की घोषणा और फैलाव (1:4,7,12,18,27; 2:15,22)। इस कारणवश पौलुस ने अपने लक्ष्य और इच्छाओं को त्याग दिया। वह धीरज से सब कुछ सहता गया। यीशु मसीह की मदद से ऐसा हो सका था। यही बात उस ने फ़िलिप्पी के विश्वास लाने वालों को सिखायी। इस पत्र में त्याग भी एक विषय है - 2:5-8; 3:8-10.

1 सभी अध्यक्ष, सेवक (देखभाल करने वाले) और सहकर्मियों सहित पौलुस और तिमोथी, जो यीशु मसीह के सेवक हैं, हम सभी की ओर से मसीह यीशु में पवित्र लोगों के नाम जो फ़िलिप्पी में रहते हैं

2हमारे परमेश्वर पिता और स्वामी यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिले।

3तुम्हारी याद आने पर मैं अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। 4हर प्रार्थना में तुम्हारे लिए मैं हमेशा खुशी के साथ बिनती करता हूँ। 5इसलिए कि सुसमाचार में तुम्हारी सहभागिता आरम्भ से है, 6मुझे इस बात का भरोसा है कि परमेश्वर ने तुम लोगों के बीच एक अच्छा काम शुरू किया है, वह उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करते रहेंगे।

7क्योंकि तुम मेरे दिल (मन) में बस गए हो, मेरे लिए यह भला है, कि मैं तुम्हारे बारे में ऐसा सोचूँ, कि मेरी जंजीरों और सुसंदेश का जवाब और सबूत देने के बारे में तुम सब मेरे साथ सहभागी हो सकोगे। 8यीशु मसीह के स्नेह के साथ मैं तुम्हें किस तरह चाहता

1:1 "सेवक"- रोमि. 1:1.

"देख-भाल करने वाले"-प्रे.काम 20:38; 1 तीमु. 3:3; 1 पतर. 5:2.

"तिमोथी"- प्रे.काम 11:1 इस पत्र को लिखने में तीमु. ने सहायता नहीं की थी किन्तु शायद पौलुस के कहे जाने पर लिखा। रोमि. 16:22 से तुलना करें।

"पवित्र लोग"- रोमि. 1:7.

"फ़िलिप्पी"- प्रे.काम 16:12-40.

1:2-3 रोमि. 1:7-8.

1:4 "हर प्रार्थना में"-रोमि. 1:10.

"खुशी"-प्रायः मण्डलियाँ या कलीसियाएँ पौलुस के दुख का कारण थीं। 1 कुरि या गलातियों में उसके आनन्द के विषय कुछ नहीं है। उन कलीसियाओं की तुलना में फ़िलिप्पी कलीसिया भिन्न थी। फ़िलिप्पियों में 'आनन्द' एक विशेष विषय था - पौलुस के किसी और पत्र की तुलना में यह शब्द इस में सब से अधिक है - 1:18,25,26; 2:2,17,18,28; 3:1; 4:1,4,10.

1:5 यहाँ पौलुस के धन्यवाद और आनन्द का कारण है - जिस सहभागिता और सहायता का उन्हों ने अनुभव किया उसमें कोई रूकावट नहीं आयी- 4:14-16. मसीह के सुसमाचार ने उन्हें हृदय और कार्यों में एक किया।

"सुसमाचार(सुसंदेश)"- 1 कुरि. 15:1-8 में पौलुस सुसंदेश की परिभाषा देता है। रोमियों का पूरा पत्र इसका पूरी तरह से खुलासा करता है।

1:6 "भरोसा" - 2 कुरि. 1:14-15; गल. 5:10; 1 थिस्स. 1:4-5; इब्रा. 6:9-10.

"अच्छा...है"-परमेश्वर। हम इस पद से नीचे लिखी बातें सीखते हैः सच्चे विश्वासी परमेश्वर का कार्य हैं - इफ़ि. 2:10; 2 कुरि. 5:17. वही उनके जीवन में मुक्ति का कार्य आरम्भ करते हैं। याकूब 1:18; यूहन्ना 3:5-8; 6:37,44. वही कार्य को जारी रखते हैं - 2:13; 1 कुरि. 12:6; कुल. 1:29; इब्रा. 13:21. यह एक "अच्छा" - कार्य है। यह भीतरी कार्य है (तुम में), यह ऐसा कार्य है जो आत्मा, मन और भीतर होता है- 2:13; गल.2:20; इफ़ि. 3:16,20. इस कार्य को परमेश्वर पूरा करते हैं - रोमि. 8:29-30. किसी कारणवश लोग कार्य आरम्भ कर के ऐसे ही छोड़ देते हैं। परमेश्वर ऐसा नहीं करते। जब वह किसी के जीवन में मुक्ति के कार्य को शुरू करते हैं, वह उसे समाप्त भी करना चाहते हैं और करते भी हैं। पौलुस इस बारे में आश्वस्त था, हमें भी होना चाहिए। 2:12-13 में हम देखते हैं, कि इस में हमको परमेश्वर के साथ सहयोग करना चाहिए। नोट्स देखें।

"यीशु मसीह के दिन"- यीशु का दोबारा आना।

1:7 "दिल (मन) में बस गए हो"- 2 कुरि. 3:2; 6:11; 7:3.

"जंजीरों"- पद 13; इफ़ि. 4:1; 6:20.

"सबूत"- परमेश्वर के सेवकों को चाहिए कि सुसमाचार की आक्रमण, अरोपों, गलतफ़हमी आदि से रक्षा करें ।

1:8 मसीह पौलुस में था और पौलुस का प्रेम उसके द्वारा मसीह का प्रेम था।-गल. 2:20. जब तक हम मसीह के समान प्रेम करना न सीखें, हम उनके समान प्रेम नहीं कर पाएँगे- इफ़ि. 3:17-19. जो विश्वासी मसीह की आज्ञा में जीते हैं, उनके लिए प्रेम परमेश्वर की आत्मा का परिणाम है-गल. 5:22.

हूँ, सृष्टि के स्वामी इस सच्चाई के गवाह हैं।
9मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और समझदारी (सब तरह के विवेक सहित) ज़्यादा उमड़ सकें। 10तुम मसीह के दिन तक ईमानदार रहो और ठोकर का कारण न बनो तथा तुम उन बातों को प्रिय जानो, जो सर्वोत्तम हैं। 11मसीह यीशु के द्वारा उत्पन्न होने वाले खरेपन की फ़सल से लद जाओ, जो परमेश्वर की स्तुति और प्रशंसा के लिए होते हैं।

12भाइयो-बहनो, मैं चाहता हूँ कि तुम समझो कि जो कुछ मेरे ऊपर बीता, उन सब से सुसमाचार की बढ़त हुयी है। 13इसके फलस्वरूप राजमहल के सुरक्षा कर्मियों के बीच और दूसरे स्थानों में यह प्रगट हुआ है कि मैं यीशु मसीह के कारण कैदी हूँ। 14मेरी कैद के कारण साहस पाकर बड़े बल और बिना डर से अनेक मसीही भाई बहन परमेश्वर का वचन सुनाते हैं।

15कुछ लोग ईर्ष्या से प्रेरित होकर संदेश

"चाहता हूँ"- यहाँ वह उस हृदय के विषय कहता है, जो प्रत्येक मसीही कार्यकर्ता के पास होना चाहिए। 4:1; रोमि. 1:1; 2 कुरि. 2:4; गल. 4:19-20; 1 थिस्स. 2:17; 2 तीमु. 1:4.

1:9-11 इफ़िसियों के लिए पौलुस की प्रार्थनाओं से तुलना करें - 1:17-19; 3:16-19 और कुल. 1:9-12. पौलुस की बिनतियाँ परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित हैं और हमारी शिक्षा के लिए हैं। हम इन से सीख सकते हैं कि परमेश्वर हमारे भीतर और हमारे लिए क्या करना चाहते हैं। हम यह भी सीख सकते हैं कि दूसरों के लिए प्रार्थना कैसे करें।

1:9 "तुम्हारा प्रेम" - यहाँ परमेश्वर का इशारा संगी विश्वासियों और मानवजाति के लिये प्रेम की तरफ़ है। वह चाहते हैं कि सही तरीके से उनका प्रेम बढ़ता जाए। उन्हें और अधिक यह पहचानना है कि सच्चा प्यार क्या है और उसे कैसे दिखाया जाए। इस प्रेम को अन्धा न होकर मसीह के ज्ञान और स्नेह से भरपूर होना है-इफ़ि. 3:17-19.

1:10 "उन...हैं" - विश्वासी होने के नाते एक मण्डली में उनके जीवन के बारे में वह बताता है। इन अच्छी बातों के बारे में वह 2:1-5,14,15; 4:8-9 में कुछ कहता है।

1:11 "यीशु के द्वारा"- केवल उन्हीं के द्वारा परमेश्वर को कुछ स्वीकार योग्य होगा (यूहन्ना 1:4-5)।

"खरेपन की"- इब्रा. 12:11; याकूब 3:18 - वह बदलाव जो स्वर्गिक पिता के साथ सम्बंध के फलस्वरूप आता है।

"फ़सल- मत्ती 7:17; रोमि. 6:22; 7:4; गल. 5:22; इफ़ि. 5:9.

"परमेश्वर...लिए"- इफ़ि. 1:6,12,14.

1:12 उसे गिरफ़्तार कर के जेल में डाला गया। इस से वह निराश होकर शिकायती नहीं हो गया। उत्पत्ति 50:20 से तुलना करें। रोमि. 8:28 में उसने वह विश्वास किया जो कुछ उसने रोमि. 8:28 में लिखा था।

"बढ़त"-जिन बातों को लोग प्रायः सुसमाचार के फैलाव के लिये एक रूकावट समझ बैठते हैं वही बातें इसके प्रसार में मददगार साबित हो सकती हैं। दिखने वाली दुर्घटनाएँ आशीष बन सकती है। एक विश्वासी के जीवन की सभी घटनाएँ परमेश्वर के हाथों में, किसी अच्छे लक्ष्य को पूरा कर सकती है।

1:13 जो पहरेदार पौलुस की पहरेदारी कर रहे थे, उसने उन्हें सुसमाचार सुनाया। ये सिपाही रोमी राजा या गवर्नर की सेवा में हो सकते हैं (हमें यह नहीं मालूम कि यह चिट्ठी लिखते समय वह जेल में किस जगह था।) इसलिए सुसमाचार उन सभी स्थानों में फैलता गया जहाँ पहले नहीं पहुँचा था। 2 तीमु. 2:9 से तुलना करें।

"मैं यीशु मसीह के कारण कैदी हूँ"-सभी लोग यह जान गए थे कि पौलुस अपराधी नहीं था। उसने कानून नहीं तोड़ा था, लेकिन उसका जुर्म दूसरों को खुशी की खबर सुनाना था।

1:14 जिन अधिकारियों और पहरेदारों ने उसे बन्दी बनाकर रखा था, उन्हें सुसमाचार सुनाना साहस की बात थी। उसके साहस के इस नमूने से उनका साहस और बढ़ गया। इस से भी सुसंदेश ज़ोर शोर से फैलता गया।

1:15-17 उस समय जो लोग संदेश दिया करते थे, सभी अच्छे मन से नहीं करते थे। कुछ लोग पौलुस की महानता और सफ़लता से जल रहे थे और उसे अपना प्रतिद्वन्दी (दुश्मन) समझ रहे थे । उनकी सेवकाई स्वार्थ से प्रेरित थी। आज भी ऐसा है। कुछ सेवक मशहूर होना चाहते हैं। अपनी सफ़लता ही चाहते हैं। दूसरे सेवकों को

देते हैं, किन्तु कुछ अच्छे मन से। 16जो लोग प्रेम से वचन सुनाते हैं, यह जानते हैं कि मैं सुसमाचार की रक्षा के लिए ठहराया गया हूँ। 17दूसरे लोग अच्छे उद्देश्य से नहीं लेकिन स्वार्थी इच्छा से यह सोचकर वचन देते हैं, कि जेल में मेरे लिए तकलीफ़ें (परेशानी, दुख) उत्पन्न हों। 18तो इसका परिणाम क्या है? केवल यह कि हर तरह से - चाहे बहाने से या सच्चाई से, मसीह के विषय में बताया जाता है। और मैं उसी में आनन्दित हूँ और रहूँगा भी।

19क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझे तुम्हारी प्रार्थना और यीशु मसीह की आत्मा की मदद से आज़ादी मिलेगी। 20हमेशा की तरह आज भी मैं दिली इच्छा और आशा के साथ कह सकता हूँ कि मैं किसी बात से न शर्माऊँगा, परन्तु बड़ी हिम्मत दिखाकर मेरे जीवन से यीशु मसीह को आदर सम्मान मिलेगा, चाहे मैं मरूँ या जीऊँ। 21क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह और मर जाना फ़ायदेमंद है। 22लेकिन यदि देह में ज़िन्दा रहने से मुझे मेरी मेहनत का फल मिलेगा, तो मुझे मालूम नहीं कि मैं क्या चुनूँ। 23मैं इन दोनों के बीच फँसा हुआ हूँ, मेरे अन्दर यह

नीचा करने के साथ अगर उनके लिए समस्या पैदा कर सकें तो वह भी करने में कसर नहीं रखते। लेकिन जैसा पहले था आज भी है। वह यह कि कुछ मसीह के लिए और लोगों के लिए प्यार की वजह से सुसंदेश देते है।

1:18 पौलुस ने कभी भी किसी को अपना प्रतिद्वन्दी नहीं समझा। वह चाहता था कि मसीह और उनका संदेश सब जगह सुनाया जाए। जो लोग उसे पसन्द नहीं करते थे, उसके लिए परेशानी खड़ी करते थे, लेकिन सुसमाचार देते थे, वह उनके लिए खुश था। वह खुद मशहूर नहीं होना चाहता था, लेकिन यीशु को ऊँचा उठाना चाहता था। यहाँ उन सब के लिए एक बड़ी सीख है। हालाँकि पौलुस उन लोगों की तरफ़ इशारा कर रहा था, जो मसीह के सम्बन्ध में वचन देते थे, न कि वे जिनके बारे में वह चेतावनी देता था। (2 कुरि. 11:13-15; गल. 1:7-8 आदि)।

1:19 शायद पौलुस उसके विरोध और खिलाफ़त से मुक्ति की बात कर रहा है और उसी प्रकार मौत से आज़ादी के विषय भी कह सकते है - पद 25,26.

"तुम्हारी प्रार्थना"- फिले. 22; रोमि. 15:30-32.

"यीशु मसीह की आत्मा"- रोमि. 8:9 और नोट देखें।

1:20 वह निश्चित था कि किसी भी समय या हालात में वह मसीह के लिए साहस से बोलने में हिचकिचाएगा नहीं। इफ़ि. 6:19-20 से तुलना करें।

"मसीह को आदर" - जब से पौलुस ने गल. 1:16 में यह कहा, तब से यह पौलुस के जीवन और सेवकाई का परिणाम रहा है। अब भी उसका यही उद्देश्य था और अपेक्षा भी। जीवन या मृत्यु किसी भी परिस्थिति में उसका इस से बड़ा कोई और उद्देश्य नहीं हो सकता।

"जीऊँ"-पौलुस के हर दिन के जीवन, व्यवहार मुँह के शब्दों से मसीह को सम्मान मिल रहा था, सिर्फ़ उसके विचारों और इच्छाओं से नहीं।

1:21 "जीवित रहना मसीह"- गल. 2:20. पौलुस उसमें मसीह के जीवन द्वारा जीवन जीता था अपने स्वयं की ताकत में नहीं, वह अपनी नहीं मसीह की ताकत में सेवा करता था। वह यीशु को इज़्ज़त देना चाहता था, खुद को नहीं।

"मर जाना फ़ायदेमंद"- पौलुस को मौत का डर नहीं था (इब्रा. 2:15 देखें)। वह भजन 116:15 की सच्चाई जानता था। वह जानता था कि चाहे वह जिए या मरे मसीह उसमें सम्मान पाएँगे - पद 20. लेकिन जैसे पद 23 दिखाता है, मसीह के पास जाने की भी खुशी उसके मिलने वाले पूरे लाभ का एक भाग थी। क्या प्रत्येक व्यक्ति यह कह सकता है कि मरना उसके लिए फ़ायदेमन्द है। नहीं, केवल वे ही कह सकते हैं जो मसीह के लिए जीते है। जो लोग अपने लिए जीवित हैं उनके लिए मरना लाभकारी नहीं हो सकता। जो लोग मसीह को नहीं जानते, उसके लिए मौत एक दुश्मन है।

1:22-24 "मेरी मेहनत का फल"- रोमि. 1:13; 7:4 उसके भरोसे पर ध्यान दें, कि मसीह के लिए उसका परिश्रम सफ़ल होगा। यह इस समझ से पैदा हुआ, कि यह मसीह ही थे जो उसमें काम कर रहे थे। कुल. 1:29.

"क्या चुनूँ"- मरना और जीना दोनों ही को वह स्वीकार कर चुका था। वह यह फ़ैसला नहीं कर पा रहा था कि चुनाव किस का करे।

इच्छा है कि मसीह के पास रहने के लिए यहाँ से चला जाऊँ, जो कि कहीं अधिक अच्छा है। 24परन्तु मेरा देह में जीवित रहना तुम्हारे लिए ज़्यादा फ़ायदेमन्द है। 25मुझे भरोसा है, और इस वजह मैं जानता हूँ कि मैं जीवित रहूँगा ताकि तुम्हारी तरक्की और विश्वास में आनन्द के लिए तुम्हारे साथ बना रहूँ। 26ताकि, मेरे तुम्हारे पास दोबारा आने से तुम्हारी खुशी और बढ़ जाये।

27ताकि चाहे मैं आऊँ और देखूँ या न आऊँ, केवल तुम्हारा चाल-चलन मसीह के महान संदेश के योग्य हो। और यह भी सुन सकूँ कि तुम एक आत्मा में स्थिर होकर और एक मन से मिलकर सुसमाचार के विश्वास के लिए भरपूर कोशिश करते हो। 28तुम अपनी खिलाफ़त करने वालों से डरते नहीं हो। यह उनके विनाश का उनके लिए साफ़ निशान है, लेकिन तुम्हारे लिए उस मुक्ति का साफ़ चिन्ह है जो परमेश्वर की ओर से है। 29मसीह के कारण तुम्हें यह अनुग्रह दिया गया, कि तुम न केवल उन पर ईमान (विश्वास) लाओ, लेकिन उनकी खातिर दुख भी उठाओ। 30तुम खुद को इसी संघर्ष (कश्मकश) में पाते हो, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है और सुनते हो कि मैं अब भी कर रहा हूँ।

2 इसलिए यदि मसीह में कुछ शान्ति, प्यार की तसल्ली, पवित्र आत्मा की सहभागिता, प्यार से भरी कोमल भावना

1:23 "मसीह के पास"- 2 कुरि. 5:8; लूका 23:43. एक विश्वासी मरते ही मसीह यीशु की मौजूदगी में पहुँच जाता है।

1:25 "तरक्की...आनन्द"- इफ़ि. 4:12-13. विश्वास में उन्नति के साथ-साथ खुशी बनी रहेगी। प्रत्येक विश्वासी को ज्यादा यह देखना चाहिए कि दुनिया में किसी और बात की तरक्की से मसीही विश्वास में तरक्की करें।

"बना रहूँ"- जहाँ तक उसकी खुद की बात थी, वह मर कर मसीह के पास पहुँचने की इच्छा रखता था। इसके बावजूद यह उसके लिए खास बात नहीं थी, कि वह क्या चाहता था। उसके काम और प्रार्थनाएँ दूसरों की ज़रूरत से प्रेरित थे। तुलना करें। 1 कुरि. 9:19-23; 10:24,33. पौलुस वह कैसे जान सकता था, कि उस समय वह नहीं मरेगा? परमेश्वर ने उसे आश्वासन दिया कि उसकी आज़ादी की बिनती का जवाब वह देंगे -पद 19; 2:24.

1:27 "योग्य" - इफ़ि. 4:1; कुल. 1:10; 1 थिस्स. 2:12.

"स्थिर होकर"- इफ़ि. 6:11,14.

"एक आत्मा ...एक मन"- 2:2; इफ़ि. 4:2; 1 कुरि. 1:10; रोमि. 12:16.

"कोशिश"-पद 7; यहूदा 1. जब सुसमाचार पर किसी तरह का हमला किया जाता है, तब यीशु के लोगों को झूठी शिक्षा और गलती के साथ कोई समझौता नहीं करना चाहिए। सुसमाचार की सच्चाई के लिए संघर्ष करना अच्छी बात है और इसे बुद्धिमानी, आत्मिक बल और उस योग्यता और प्यार से करना चाहिए, जो स्वर्गिक पिता हमें देते है।

1:28 "खिलाफ़त करने वालों"- पद 30.

"डरते नहीं" - पद 14,20; मत्ती 10:28; इब्रा. 13:6.

"चिन्ह"- मसीह में उनकी हिम्मत इस बात का निशान थी, कि परमेश्वर उनके साथ थे। प्रे.काम 4:13; 2 थिस्स. 1:4-7. उनके विरोधी यह जान सकते थे कि परमेश्वर मसीह के विश्वासियों के साथ थे, उनके स्वयं के साथ नहीं जो विश्वासियों का विरोध करते थे।

1:29 "दिया...लाओ" - विश्वास परमेश्वर का एक दान है -उत्पत्ति 2:8 इस पृथ्वी पर यह जानना एक बड़ी बात है। देखें 3:10; प्रे.काम 5:41; रोमि. 5:3; 2 कुरि. 1:5; 1 पतर. 3:13-14,16.

"दुख भी उठाओ"- आशीष पाना (प्राप्त करना) है। क्या मसीह के लिए दुःख उठाना एक इज़्ज़त की बात नहीं है? प्रेम का उत्तर होगा "हाँ" - यह इस बात की कोशिश नहीं करता कि किसी तरह से यीशु के कारण होनेवाली मुश्किल, समस्या, से बचे।

1:30 "मुझ करते"- पौलुस की कुछ परेशनियों को जानने के लिए प्रे.काम 16:19-40 देखे। उस जगह में शुभसंदेश के बहुत से दुश्मन थे और उनके द्वारा विरोध भी हो रहा था।

2:1-2 यीशु के लोगों में आपसी मनमुटाव के कारण पौलुस को दुख था - 1:27; 4:2 यीशु के मानने वाले होने के फलस्वरूप उनके पास जो कुछ था, उस आधार पर वह उन से अनुरोध करता है।

और दया है, 2तो एक ही मन, समान प्रेम, एक ही रवैय्या रखो, जिस से मैं खुशी से भर जाऊँ। 3अपने नाम के लिए या स्वार्थ की भावना से कुछ न किया जाए, लेकिन मन की दीनता से हर एक दूसरों को अपने से अच्छा (उत्तम) समझे। 4हर एक सिर्फ़ अपने फ़ायदे की बातों पर ध्यान न दे, लेकिन दूसरों के फ़ायदे को भी देखे।

5तुम्हारे भीतर वही मन हो, जो मसीह यीशु में था। 6हालाँकि आरम्भ ही से यीशु के पास परमेश्वर का स्वभाव था, फिर भी परमेश्वर के साथ बराबरी को ऐसी

2:1 "यदि"- वह यह संदेह नहीं कर रहा है कि उन में वे बातें हैं जो वह उन्हें तब बता रहा था तात्पर्य यह है कि चूंकि 2:3 तुम में यह बातें है - यूहन्ना 17:20-23; रोमि. 6:5; इफ़ि. 4:15-16.

"तसल्ली"- 2 कुरि. 1:3,5,7

"सहभागिता"- 2 कुरि. 13:14.

"कोमल भावना और दया"- ये गुण हर एक विश्वासी में दूसरे लोगों के लिए होने चाहिए।

2:3 "भावना" - 1:17; यिर्म. 45:5; 1 कुरि. 13:5; गल. 5:20.

"दूसरों...समझो"-रोमि. 12:10,16; गल. 5:26; 1 पतर. 5:5-6. पौलुस में इसका नमूना देखें - इफ़ि. 3:8; 1 तीमु. 1:15.

2:4 रोमि. 14:19; 5:21; 1 कुरि. 10:24.

2:5-11 दूसरों के लिए नम्रता और प्यार के सब से बड़े नमूने को पौलुस उनके सामने रखता है। क्या यह हो सकता है कि जिस तरह यीशु का रवैया और काम था हमारा भी हो? हाँ, यह संभव है। इसीलिए तो पौलुस इसके विषय कहता है, नहीं तो ऐसा नहीं कहा होता पद 5, 1 कुरि. 2:16; रोमि. 8:5 भी देखें। यीशु अपने लोगों के भीतर हैं और जब वह उनके हृदय (इफ़ि. 3:17) के मालिक हैं, वह उनके मनों को ऐसे विचार और रवैये से भर सकते हैं, जिसकी उन्हें ज़रूरत है। जब ऐसा होता है झगड़े, स्वार्थ, धोखा और क्रोध समाप्त हो जाता है।

बाईबल का नया नियम जिन बातों को सिखाता है, उसका निचोड़ पौलुस इन पदों में देता है। यहाँ वह रोज़मर्रा की जिन्दगी की बात कर रहा है। वह चाहता है कि लोग इन बातों को अमल में लाएँ। यीशु मसीह स्वर्गिक पिता के घर और उसकी शान शौकत को छोड़कर.. इस ज़मीन पर आए और सेवा करने का जीवन बिताया। सभी लोगों को चाहिए कि दुनिया की झूठी शान शौकत और धन दौलत से नफ़रत करें और परमेश्वर और लोगों की सेवा दीनता से करें।

2:6 "परमेश्वर के साथ बराबरी" - यहाँ यूनानी में एक ही मतलब संभव हैः मसीह का स्वभाव था जो परमेश्वर का है। बाईबल में दूसरे स्थानों पर यीशु को परमेश्वर कहा गया है। यशा. 9:6; यूहन्ना 1:1; 20:28-29; प्रे.काम 20:28; रोमि. 9:5; तीतुस 2:13; इब्रा. 1:8; 1 यूहन्ना 5:20. इसके अलावा और स्थान भी है, जहाँ मसीह को परमेश्वर कहा गया है। देखें मत्ती 1:23; 2:11; 3:17; 10:37; 11:27; 12:8; 14:23; 18:20; 22:41-45; 26:17,19,20; यूहन्ना 5:17-26; 8:19; 9:38; 10:30-33; 11:25; 14:7,10,23; 17:1-5; प्रे.काम 3:14-15; रोमि. 1:7; 8:9-10; 1 कुरि. 8:6; 2 कुरि. 4:4; प्रे.काम 13:14; इफ़ि. 3:17-19; कुल. 1:15; 2:9; 1 थिस्स. 1:1; 1 तीमु. 1:1; 3:16; इब्रा. 1:3,10,12; 1 पतर. 3:15; 1 यूहन्ना 1:3; 2:22; प्रका. 1:4-5,8 (प्रका. 22:12-13 के साथ); प्रका. 1:17; 5:8,13,14; 19:16; 21:6. दूसरे पद यह दिखाते हैं कि याहवे देह में यीशु है (ओल्ड टैस्टामैन्ट में परमेश्वर का नाम) पद 10,11 और लूका 2:11 में दूसरे पद देखें।

"परमेश्वर के साथ बराबरी"- यहाँ "लूटना" यूनानी शब्द "कब्ज़ा करना" या "बल प्रयोग कर ले जाने" - की तरफ़ इशारा है। यह किसी वस्तु को वश में करने को दिखाता है। शब्दों से शायद ऐसा लगता हो, लेकिन इसका मतलब कुछ ऐसा होगाः स्वभाव और गुणों में परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा समान हैं। यह कुछ ऐसा है जिसे इन में से कोई ज़बरदस्ती ले सकता है, न छोड़ सकता है। इसलिए इन अर्थों में यीशु का अपने आप को परमेश्वर के समान समझना डाका डालना या लूटना नहीं है। त्रिएकत्व के तीन सदस्य जहाँ तक पद का सवाल है, समान नहीं है। पिता की जगह सब से ऊपर है। यूहन्ना 5:19-23; 14:28; 1 कुरि. 15:27-28 देखें। परमेश्वर पुत्र यीशु ने यह नहीं चाहा कि परमेश्वर पिता की समानता पर कब्ज़ा करें। सच्चाई इसके विरोध में थी। वह खुश थे कि पिता, पिता रहें और बेटा पिता की मानता रहे - पद 8; यूहन्ना 4:34; 5:30; 6:38; 8:29; 9:4; 14:31; 15:10; 17:4. इस पृथ्वी पर बेटे के आने से पहले पिता और पुत्र में जो फ़र्क था, वह साफ़-साफ़ ऊपरी पद में दिखता है।

बड़ी बात नहीं समझी, जिसे मजबूती से पकड़कर रखा जाए। 7लेकिन यीशु ने अपनी सारी शान (महिमा) को अलग रखकर दूसरे मनुष्यों की तरह एक इन्सान बनकर एक बन्धुआ मज़दूर का सा स्थान ले लिया। 8पूरी तरह से एक इन्सान के रूप में आकर, उन्हों ने अपने आप को यहाँ तक दीन किया, कि मरने के लिए तैयार हो गए, यहाँ तक कि क्रूस पर मौत भी सह ली। 9इसलिए परमेश्वर ने यीशु को बहुत ऊँचा किया और एक नाम दिया जो हर एक नाम से ऊँचा है। 10ताकि जितने लोग स्वर्ग, पृथ्वी और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम के सामने घुटना झुकाएँ। 11परमेश्वर पिता की इज़्ज़त और बड़ाई के लिए हर एक व्यक्ति यह मान

2:7 "अपनी...रखकर"- यहाँ यूनानी में अलग-अलग अनुवाद किया गया है। उदाहरण के लिए "खाली कर दिया" या "शून्य कर दिया" - लेकिन इसका सही मतलब लगाना जरूरी है। यीशु ने अपने आप को परमेश्वरत्व से खाली नहीं किया था-यह हो ही नहीं सकता था। इस ज़मीन पर के जीवन में वह परमेश्वर बना रहे। उन्हों ने अपने आप को मात्र उस शान (महिमा) से खाली कर दिया, जो पिता के साथ उनकी थी (यूहन्ना 17:5) उन्हों ने परमेश्वर के बेटे होने के नाते जो हक था उसे छोड़ दिया था। उन्हों ने अपने आप को स्वर्गिक आवास और इसके साथ जो कुछ था, उसे छोड़ दिया। 2 कुरि. 8:9 उन्हों ने अपने आपको ऐसी जगह पर रख दिया था, जहाँ वह लोगों की निगाह में किसी खास इज़्ज़त की चाह नहीं रख रहे थे। वह जिन्होने सब को बनाया, बेइज़्ज़त किए जाने और लज्जित किये जाने के लिए तैयार हो गए। - यूहन्ना 1:10-11; यशा. 53:3; मत्ती 8:20; 12:24; मरकुस 6:3; यूहन्ना 18:30. "अपनी सारी शान को अलग रखकर" यह अधिकार और शक्ति के ऊँचे स्थान से एक कदम नीचे मनुष्यों के बीच आने को सही-सही दिखाता है।

"की तरह"-यूहन्ना 1:14; रोमि. 8:3; इब्रा. 2:14. वास्तविक मानवीय स्वभाव में यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों हैं। यीशु परमेश्वर होने के साथ-साथ वास्तविक मानवीय स्वभाव के थे।

"बन्धुआ मज़दूर"-रोमि. 15:8; यूहन्ना 13:3-5; लूका 22:27; मत्ती 20:28.

2:8 "रूप" - बाहर से तो यीशु दूसरे मनुष्यों की तरह सिर्फ़ एक इन्सान ही दिखते थे। उनका ईश्वरीय स्वभाव और वह महानता जो इस संसार में आने से पहले थी, लोगों की निगाहों से छिपी हुयी थी।

"अपने...किया"- उनके जीवन भर यह सच था (मत्ती 11:29), लेकिन उनकी दीनता साफ़-साफ़ तब दिखी जब वह मरने पर थे - यशा. 53:7-8; 1 पतर. 2:23-24. परमेश्वर के बेटे के रूप में यीशु ने अपने अधिकारों पर ज़ोर नहीं दिया। उन लोगों का विरोध नहीं किया जिन्होंने उन पर झूठे आरोप लगाए, बेइज़्ज़त किया और मार डाला।

"तैयार"-इसका मतलब है पिता के प्रति आज्ञाकारी होना। मत्ती 26:39; यूहन्ना 18:11; रोमि. 5:19; इब्रा. 10:7; यूहन्ना 10:17-18.

"क्रूस"-पौलुस कहता है, यहाँ तक कि क्रूस की मौत। क्रूस पर मौत की सजा रोमियों का अपराधियों के साथ-साथ आने का अपना तरीका था।

2:9 "इसलिए" - परमेश्वर ने यीशु को उनके त्याग, दीनता और आज्ञाकारिता के लिए इनाम भी दिया। यह स्वयं मसीह की शिक्षा के अनुरूप था। - मत्ती 23:12.

"बहुत ऊँचा किया"- प्रे.काम 2:33; इफ़ि. 1:20-21; इब्रा. 1:3; प्रका. 3:21. जितना यीशु ने अपने को नम्र किया, उतना किसी ने नहीं किया, कोई इतने ऊपर उठाया भी नहीं गया। यीशु के पास सब से ऊँचा स्थान था क्योंकि वही इसके लायक थे।

"नाम"-यह सब से ऊँचा नाम "यीशु" पद 10 या "प्रेम" (पद 11) क्या है? शायद पौलुस का मतलब है "प्रभु" क्योंकि निन्दित किए जाने और मारे जाने से पहले और सम्मानित किए जाने से पहले यीशु नाम दिया गया था। ऐसा लगता है, कि पौलुस उस नाम "प्रभु" की ओर इशारा कर रहा है जो यीशु के जी उठने के बाद स्वर्ग उठा लिए जाने और सम्मानित किए जाने पर दिया गया था। प्रे.काम 2:36 तुलना करें। "नाम" - अधिकार को दिखा सकता है। यूहन्ना 14:13-14 देखें।

2:11 "परमेश्वर...इज़्ज़त"-जब यीशु को सम्मान दिए जाने के साथ प्रभु स्वीकार किया जाता है, पिता को आदर मिलता है। यूहन्ना 5:23; 1 यूहन्ना 2:23 से तुलना करें।

ले कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं।

12इसलिए मेरे प्यारो, जैसा तुम हमेशा मेरी बात मानते आए हो, मेरे हाज़िर रहने में ही नहीं, लेकिन मेरी गैरहाज़िरी में भी, डरते और काँपते अपनी मुक्ति (उद्धार) का काम करो। 13क्योंकि वह परमेश्वर ही हैं जिनकी शक्ति तुम्हारे भीतर उनकी भली इच्छा और कामों को प्रोत्साहित करती है।

14बिना वादविवाद और शिकायत (कुड़कुड़ाहट) के हर काम को किया करो। 15ताकि तुम दुष्ट और भ्रष्ट पीढ़ी में परमेश्वर की निर्दोष और ईमानदार सन्तान बने रहो और जीवन के वचन (संदेश) को थाम कर इस संसार में रोशनी के समान चमको। 16तब मैं मसीह के दिन में खुश हो सकूँगा, कि मैं न तो बेकार में दौड़ा था या

"मान ले"- वर्तमान में विश्वासी इस बात को खुशी से कहते हैं कि स्वर्ग और पृथ्वी पर यीशु सारे अधिकार के साथ सर्वशक्तिमान स्वामी हैं। चाहे जानते बूझते चाहे बिना इच्छा के, सभी को यह मानना पड़ेगा।

"प्रभु"- यहाँ पर यूनानी शब्द 'प्रभु' के लिए "कुरियोस" - है। यह बाईबल के पुराने नियम में परमेश्वर के लिए इस्तेमाल हुआ नाम है (लूका 2:11) और निर्ग. 3:14-15 देखें। उन्हीं के सामने घुटने टेके जाने चाहिए -यशा. 45:22-24; मत्ती 4:10. परमेश्वर पिता ने यह नाम, यीशु को दिया है। परमेश्वर ने सृष्टि में यह ऐलान कर दिया है कि यीशु जो मनुष्य बने, मौत सही, सृष्टि के मालिक हैं। वह महान परमेश्वर याहवे ही हैं, जो मनुष्य बन गए (प्रे.काम 2:36; 1 कुरि. 8:6; मत्ती 28:18)। यह भी कि यीशु उपासना के लायक हैं। दूसरे पद देखें जो दिखाते हैं कि यीशु याहवे ही हैं। लूका 2:11.

2:12 "इसलिए"- ऊपर दी गयी बातों को प्रकाश में लेकर (या संदर्भ लेकर)।

"मानते आए"- उसका अर्थ यह था कि उन्हों ने परमेश्वर के प्रगट किए गए सत्य को माना (रोमि. 6:17; 1 पतर. 1:22) यह बहुत ज़रूरी बात है - याकूब 1:22-25. मसीह परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी थे - पद 8. उन्हें भी होना चाहिए चाहे पौलुस उनके साथ हो या न हो। ऐसा ही हमारे साथ होना चाहिए।

"डरते और काँपते"- यशा. 66:2; यिर्म. 5:22 यह काम बहुत ज़रूरी है और इसका अनन्तकालिक असर है। आदर, सम्मान, सतर्कता और समझदारी की ज़रूरत है। परमेश्वर के लिए सम्मान के सम्बन्ध में उत्पत्ति 25:11; अय्यूब 20:28; भजन 34:11-14; 111:10; नीति. 1:7.

"काम करो"- पौलुस यह नहीं कहता है कि मुक्ति के लिए काम करने की ज़रूरत है। वह यह जानता था कि इन्सान की कोशिश और अच्छे कामों से मुक्ति कमाई नहीं जा सकती। इफ़ि. 2:8-9; रोमि. 3:28; 4:4-5; 6:23; 11:6. वह कहना यह चाह रहा है कि जो मुक्ति विश्वासियों की जिन्दगी है, उसे कामों में दिखना चाहिए। उनके पास मसीह जैसा रवैया होना चाहिए। और अपने जीवन के हर एक दायरे में उन बातों को लागू करना चाहिए।

2:13 "परमेश्वर ...जिनकी शक्ति तुम्हारे भीतर"- 1:6; इफ़ि. 2:10 देखें इसलिए कि परमेश्वर लोगों के जिन्दगी में बदलाव लाते हैं, यह सच नहीं हैं, कि हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। इसके उल्टा हमें स्वर्गिक पिता के अपने भीतरी आत्मिक जीवन को बाहर दिखाना है। हम कठपुतली नहीं है। स्वर्गिक पिता हमारे अन्दर काम कर रहे हैं। अच्छे अभिप्राय के साथ वह हमें आगे बढ़ा रहे हैं। वह चाहते हैं कि हम मसीह की तरह बनते जाएँ (रोमि. 8:29)।इस गंभीर काम में हमें उनका सहयोग करना चाहिए।

2:14-16 यहाँ दो गम्भीर बुराईयाँ हैं - सृष्टिकर्ता और उनके दिए हुए अगुवों के खिलाफ़ शिकायत (निर्ग. 16:2-8; गिनती 11:1 आदि) एक दूसरे से झगड़ा (रोमि. 14:1-4; 1 कुरि. 3:3-4)। इसके बजाए विश्वासियों को यीशु मसीह की तरह बनना चाहिए। तभी हम "निर्दोष ठहरेंगे" (1 थिस्स. 2:10; 5:23; मत्ती 10:16; 2 कुरि. 11:2)और बिना किसी खोट के (मत्ती 5:46)।

2:15 "भ्रष्ट पीढ़ी"-मत्ती 17:17; प्रे.काम 2:40; गल. 1:4; इफ़ि. 2:1-3; 4:17-19. हर एक पीढ़ी दुष्ट और सड़ी हुयी है।

"जीवन के वचन"- स्वर्गिक पिता आत्मिक जीवन देने के लिए अपना वचन उन लोगों को देते हैं, जो ईमान लाते हैं (याकूब 1:18; 1 पतर. 1:23)।

"रोशनी"- मत्ती 5:14-16.

2:16 "बेकार में"- यदि उनका चाल चलन ऐसा है, जैसा होना चाहिए, तो उस व्यक्ति को जो वहाँ मण्डली को शुरू करने वाला और शिक्षा देने वाला, यीशु मसीह के दोबारा आने पर गर्व करने का मौका होगा। गल. 4:11; 1 थिस्स. 2:19-20 से मिलान करें।

मेहनत की थी। 17हाँ, यहाँ तक कि यदि मैं अर्घ (एक पीने वाली भेंट) के रूप में तुम्हारे विश्वास से उत्पन्न होने वाली सेवा और बलिदान पर उण्डेल भी दिया जाऊँ, तो मैं तुम्हारे साथ आनन्दित होऊँगा। 18इस कारणवश तुम्हें भी खुश होना चाहिए और मेरे साथ आनन्द मनाना चाहिए।

19लेकिन मैं यीशु मसीह पर भरोसा रखता हूँ कि मैं तिमोथी को तुम्हारे पास जल्दी भेजूँगा, जिससे मैं तुम्हारे बारे में जानकर शान्ति प्राप्त करूँ। 20क्योंकि मेरे पास उसे छोड़कर समान सोच वाला और कोई नहीं, जो ईमानदारी से तुम्हारे बारे में सोचता हो। 21इसलिए कि हर एक जन यीशु के काम के बारे में नहीं, अपने फ़ायदे (स्वार्थ) की बात सोचता है। 22लेकिन तुम उसके विश्वसनीय बर्ताव को जैसा बेटे का पिता के साथ होता है, जानते हो कि उसने सुसमाचार फैलाने में मेरी सेवा की है। 23इसलिए जैसे ही मुझे अपने बारे में मालूम हो जाता है, मैं उसे जल्दी भेजना चाहूँगा। 24लेकिन मुझे यीशु में भरोसा है, कि मैं खुद बहुत जल्दी आऊँगा।

25मैंने यह ज़रूरी समझा है कि इपफ्रुदितुस को तुम्हारे पास भेजूँ जो काम में मेरा भाई, साथी, फ़ौजी, तुम्हारा संदेशवाहक और मेरी ज़रूरतों को पूरा करने वाला है। 26उसका मन भारी था और वह तुम सब को देखने की कामना करता था तुम ने उसकी बीमारी का हाल सुना ही था। 27बेशक बीमारी के कारण वह मरने पर था। लेकिन परमेश्वर ने उस पर दया की। न केवल उस पर लेकिन मुझ पर भी, ताकि मुझे बार-बार दुःख न सहना पड़े। 28इसलिए मैंने उसे बड़ी तत्परता से भेजा, ताकि जब तुम उसे फिर से देखो, तुम खुश हो और मुझे

2:17-18 "पीने वाली भेंट"- निर्ग. 29:40 देखें। शायद पौलुस मौत और हिंसात्मक मौत की संभावना की बात करता है। (2 तीमु. 4:6)

"विश्वास"- मसीह में उनके विश्वास ने पौलुस के लिए प्यार की सेवा को उत्पन्न किया था (दूसरों के लिए भी, 4:14-16; 2 कुरि. 8:1-4)। यह कुर्बानी की तरह था। देखें 4:18; इब्रा. 13:16. यदि मसीह के सेवा के लिए वह मर जाए और परमेश्वर के लिए उण्डेले जाने वाली भेंट बने तो उसे खुशी थी। ऐसा उनके साथ होने पर, उन्हें भी करना चाहिए।

2:19 "तिमोथी"- 1:1; 1 कुरि. 4:17; 16:10; 1 थिस्स. 3:2.

2:20 "समान सोच वाला"- कि उसके मन का वहाँ उस समय कोई नहीं था। मतलब यह कि पौलुस के साथ तीमु. फ़िलिप्पी में काम की शुरूआत से ही था। प्रेरित अध्याय 16.

2:21 संसार की तो यह हालत है ही, अक्सर मसीही भी अपने मतलब की बात को चाहता है।

2:22 "बेटे"- आत्मा की बातों में पौलुस तीमु. को बेटा समझता था। 1 तीमु. 1:2; तुलना करें, 1 कुरि. 4:14-15; गल. 4:19; 1 थिस्स. 2:11.

2:23-24 देखें 1:25-26.

2:25 "भाई"- आत्मिक बातों में भाई या संगी विश्वासी।

"काम...साथी"- 2 तीमु. 2:3-4; इफ़ि. 6:11.

"मेरी ज़रूरतों"- 4:18 शायद इपफ्रुदितुस के पैसे का दान, पौलुस तक लाने के बाद वही जेल में तरह-तरह से मदद करता रहा।

2:27 "मरने पर"- ऐसा लगता है कि पौलुस ने बहुतों को ठीक किया था (प्रे.काम 19:11-12; 28:8-9)। उसे तुरन्त ठीक नहीं कर पाया था। गल. 4:13; 1 तीमु. 5:23; 2 तीमु. 4:20 भी देखें। अन्त में पौलुस भी ठीक हो गया था। ("स्वर्गिक पिता ने दया की")

"दुःख"- इस चिट्ठी का खास विषय खुशी है (1:4)। लेकिन इस दुनिया में अक्सर विश्वासियों की खुशी में उदासी भी मिली रहती है- 2 कुरि. 6:10; 1 पतर. 1:6.

2:28-30 जब पौलुस जेल में था, इपफ्रुदितुस को मण्डली ने इसलिए भेजा कि पौलुस की मदद करे। लेकिन यीशु के काम के बोझ से वह बीमार पड़ गया और वापस फ़िलिप्पी की मण्डली में आना चाहा। क्या वहाँ मण्डली यह सोच सकती थी, कि वह अपने काम में नाकामयाब हो गया और पौलुस की ज़रूरत के समय वह उसे छोड़ रहा था। पौलुस उन्हें बताने की कोशिश करता है कि ऐसी बात नहीं है।

अधिक दुख न हो। 29उसे मसीह में बड़े आनन्द के साथ कबूल करो और ऐसे लोगों को इज़्ज़त दो। 30क्योंकि मसीह के काम के लिए बिना अपने जीवन की फ़िक्र किए वह मौत के निकट पहुँच गया था, ताकि मेरे लिए की जाने वाली तुम्हारी सेवा की कमी को पूरा कर सके।

3 अन्त में भाइयो-बहनो, यीशु में खुश रहो। एक ही बात को बार-बार तुम्हें लिखे जाने में मुझे कोई परेशानी नहीं होती है, लेकिन तुम्हारे लिए फ़ायदेमन्द है।

2कुत्तों से सावधान रहो। बुरे काम करने वालों से सतर्क रहो! काट-कूट करने वालों से सावधान!

3हम वे यहूदी (खतना वाले) हैं जो आत्मा में परमेश्वर की आराधना करते हैं और मसीह यीशु में आनन्दित होते हैं और शारीरिक बातों पर भरोसा नहीं करते। 4हालाँकि मैं बाहरी रीति-रिवाज़ों (शरीर) में

2:29 "इज़्ज़त"- (पद 29) इस पृथ्वी पर दूसरे लोगों की तुलना में ये लोग अधिक सम्माननीय हैं। स्वर्गिक पिता भी ऐसों का आदर करेंगे। यूहन्ना 12:26.

2:30 "बिना...किए"- प्रे.काम 20:24; रोमि. 16:4; 1 यूहन्ना 3:16.

3:1 "खुश रहो"- 1:4; 4:4; अपनी सफ़लता, अच्छे माहौल और ढेर सी सम्पत्ति में विश्वासियों को खुश नहीं होना चाहिए, लेकिन यीशु में। इब्रा. 3:17-18 देखें।

"एक ही बात"- शायद पौलुस खुश होने के लिए दोहराए जाने वाले शब्दों की ओर इशारा कर रहा है। या हो सकता है, इसके पहले के पदों में दुष्ट लोगों के बारे में चेतावनी की तरफ़ - इसके पहले भी शायद उसने ऐसी चेतावनी उन्हें दी हो।

3:2 यहाँ पौलुस उसी तरह के लोगों के बारे में कहता है, जिन के बारे में दूसरी मण्डलियों को भी चेतावनी दी थी। 2 कुरि. 11:13-15; गल. 1:7; 2:4; 5:12; प्रे.काम 15:1-2,5 भी देखिए।

"कुत्तों"- यहूदी लोग कुत्ते को अशुद्ध समझते थे और गैरयहूदियों को कुत्ता समझते थे। पौलुस का कहना यह है कि जिन यहूदियों ने मसीह को नहीं अपनाया और जो मसीहियों को उलझन में डाल रहे थे, वे सच में अशुद्ध पशु थे।

"बुरे...वालों"- मसीह के अच्छे संदेश को बिगाड़ना और मसीही लोगों को सच्चाई से हटाना सब से बड़ी बुराई है। इस में तो अनन्तकाल का सवाल है।

"काट-कूट"- यहाँ वह खतने के रिवाज़ की तरफ़ इशारा कर रहा है। उत्पत्ति 17:10-14. कुछ यहूदी, गैरयहूदी मसीहियों पर ज़ोर डाल रहे थे, कि वे इस प्रथा को अपनाएँ। वह व्यंग की भाषा का इस्तेमाल करता है, क्योंकि जो अविश्वासी यहूदी, सुसमाचार का विरोध करते थे, वे खतने के सच्चे मतलब को अपने जीवन में नहीं दिखा रहे थे। (रोमि. 2:25-29)। इसलिए उनके लिए खतने की रीति एक खाली और अर्थहीन देह को कटवाना मात्र था।

3:3 "हम"- अर्थात् मसीह को अपनाने वाले चाहे वे यहूदी मत के थे या गैरयहूदी। हालाँकि उनका शारीरिक खतना नहीं हुआ था लेकिन वे सचमुच में "खतने वाले" - थे - मतलब यह कि पुरानी खतने की रीति जिस भीतरी वास्तविकता को दिखाती थी, वह उनके जीवन में थी। देखें रोमि. 2:29; कुल. 2:11. पौलुस अब सच्चे विश्वासियों की परिभाषा देता है।

"आत्मा में परमेश्वर की आराधना"-यूहन्ना 4:23-24.

"मसीह यीशु में आनन्दित"- 1 कुरि. 1:30-31.

"शारीरिक...नहीं"-झूठे शिक्षक यह सिखाया करते थे कि शरीर पर की गयी विधि, मानवीय कोशिश और अच्छे काम आदि परमेश्वर को खुश करते हैं, और मुक्ति पाने में मददगार हैं। इस बात को पौलुस पूरी तरह से रद्द कर देता है। वह इन्सानी स्वभाव को अच्छी तरह से जानता था। रोमि. 7:18; 8:5-8. सच्चे मसीही अपने विश्वास को मसीह पर रखते हैं अपने ऊपर नहीं और न अपने कामों पर या दूसरे लोग उनके लिए क्या कर सकते हैं - गल. 2:16; 5:24; इफ़ि. 2:8-9.

3:4-7 यहूदी झूठे शिक्षक अपने ऊपर और धार्मिक कामों पर भरोसा रखते हैं देखें रोमि. 2:17-20. पौलुस अपने पुराने समय की तरफ़ नज़र डालता है और कहता है कि वह धार्मिक कामों के सम्बन्ध में किसी से कम नहीं था। इसके विपरीत उसने खुद पर और धर्म पर भरोसा रखना छोड़ दिया था। वह सात ऐसी बातें बताता है जो एक अच्छे यहूदी में हुआ करती थीं।

भरोसा करने का बहाना कर सकता था।
5मेरा खतना आठवें दिन हुआ था।
इस्राएल के वंश में बेन्जामिन गोत्र का और
इब्रियों का इब्री हूँ। जहाँ तक यहूदी धर्म
की बात है, तो एक फ़रीसी हूँ। 6जोश की
कहें तो मण्डली को सताने वाला, जहाँ
तक नियमशास्त्र के आधार पर धार्मिकता
की बात है, तो निर्दोष।
7जो कुछ मेरे लाभ का था, उन सब
को मैंने मसीह की खातिर नुकसान समझ
लिया। 8हाँ, मैं सचमुच में अपने प्रभु यीशु
मसीह को जानने के सामने सब कुछ को
नुकसान समझता हूँ। जिसके लिए मैंने सब
तरह का नुकसान सह लिया और सब चीज़ों
को कूड़ा समझता हूँ, ताकि मैं मसीह को
हासिल कर सकूँ और उन में पाया जाऊँ।
9नियम शास्त्र को पालन करने से मिलने
वाली मेरी अपनी धार्मिकता नहीं, लेकिन

3:5 "आठवें दिन"- लैव्य. 12:3.

"इस्राएल"- स्वर्गिक पिता का चुना हुआ देश (रोमि. 9:4-5)।

"बेन्जामिन"- यहूदी इस गोत्र को काफ़ी आदर के साथ देखते थे। इसी गोत्र के क्षेत्र में यरूशलेम था।

"इब्रियों का इब्री"- इसका मतलब था कि वह इब्रानी भाषा जानता था और उनके रीति रिवाज़ों को मानता था।

"फ़रीसी"- वह यहूदियों के कट्टरपंथी समूह का था (मत्ती 3:7 की टिप्पणी देखें)।

3:6 "जोश"- जिसे वह सच समझता था, उसके लिए उसके पास जोश था और उन सब के विपरीत की शिक्षाओं से नफ़रत किया करता था (प्रे.काम 8:3; 9:1-2)। इसीलिए यहूदी अगुवे उसकी बहुत इज़्ज़त दिया करते थे।

"निर्दोष"- उसका अभिप्राय यह था कि वह बाहर से मूसा द्वारा दिए किसी भी परमेश्वर के किसी नियम को नहीं तोड़ता था। (दूसरे ईश्वरों की उसने पूजा नहीं की, मूर्ति नहीं बनायी, चोरी नहीं की व्यभिचार नहीं किया)। बाहरी सभी बातों को उसने किया था। अपने जीवन में वह कुछ खराबी नहीं देखता था। बाद में उसने जान लिया था कि मन में उसने एक आज्ञा को तोड़ा था - रोमि. 7:7-11. अपने कामों से मुक्ति पाने में यदि कोई बहुत आगे था, तो वह खुद था।

3:7 उसका यह नया नज़रिया दमिश्क के रास्ते पर उसके अनुभव पर आधारित था - प्रे.काम 9:3-6 बातों का सही महत्व क्या है, इसका ज्ञान उसे मिल गया था। जिन बातों को वह आत्मिक लाभ की समझता था, अब वही नुकसान की बातें थीं। खुद पर भरोसा रखने और घमण्ड करने से वह यीशु से दूर था। अब उसने सब कुछ छोड़ दिया - जन्म वंश, धर्म और सफ़लता का घमण्ड। जो बातें उसे खुश करती थी, उसकी आत्मिक आँखों के खुलने से अब नुकसान की लगने लगीं। वह स्वार्थी इन्सान था। अब मसीह सब कुछ बन गया । यह उन सभी के बारे में सच है, जिनकी आँखें सचमुच में खुल गयी हैं और उन्हों ने मसीह को जान लिया है।

3:8 "सब कुछ"- सिर्फ़ वे बातें नहीं, जिनके बारे में वह पद 4-6 में बताता है। उसकी दृष्टि में वह सब जो उसके जीवन से जुड़ा था-वह सब जो धर्म देता है आदि सभी अर्थहीन हो गया। तुलना करें मत्ती 10:39; 16:24-26. मसीह को पहचानना एक बड़ा इनाम था, जिसके सामने सब कुछ कूड़ा था। यूहन्ना 17:3; और 2 कुरि. 4:6 से मिलाप करें। पौलुस यीशु के साथ व्यक्तिगत सहभागिता की बात करता है। इसके साम्हने वह सब कुछ को कचरे का ढेर समझता है। यह खेद की बात है कि पौलुस जिन बातों को कचरा समझता था, उन्हीं के लिए लोग जीवित हैं।

"सब तरह का नुकसान"- लूका 14:33. यदि एक व्यक्ति मसीह को प्राप्त करता है और दुनिया का सब कुछ खो सकता है, यह हानि की बात नहीं, उसको दुखी नहीं होना चाहिए। क्योंकि मसीह में बुद्धि, धार्मिकता, पवित्रता, मुक्ति और हर तरह की आत्मिक आशीष हैं-1 कुरि. 1:30; इफ़ि. 1:3. एक सच्चा विश्वासी बनने में क्या कीमत देनी पड़ती है? जो कुछ उसके पास है। एक वास्तविक मसीही बनने में इन्सान को क्या मिलता है? जो कुछ स्वर्गिक पिता का है - 1 कुरि. 3:21; रोमि. 8:17; 2 कुरि. 6:10; 8:9.

3:9 "मेरी अपनी धार्मिकता"- पद 6; रोमि. 10:3. इसी मात्र धार्मिकता के लिए लोग कोशिश करते हैं। लेकिन इन्साफ़ के समय सृष्टिकर्ता के सामने खड़े होने के समय यह किसी फ़ायदे की नहीं। लूका 18:9-14; यशा. 64:6 से तुलना करें।

जो मसीह में विश्वास के कारण है और जो विश्वास के द्वारा परमेश्वर से आती है। 10ताकि मैं उन्हें, उनके जी उठने की शक्ति और उनकी मौत की समानता में उनके दुखों की सहभागिता जानूँ। 11 और किसी तरह से मरे हुओं में से जी उठने की हालत तक पहुँच सकूँ।

12यह नहीं कि मैंने सब कुछ हासिल कर लिया है या सिद्ध बनाया जा चुका हूँ। लेकिन मैं आगे बढ़ता जाता हूँ ताकि मैं वह

"विश्वास के कारण"- रोमि. 3:21-26,28; 5:1; 10:10; 2 कुरि. 5:21; गल. 2:16.

3:10 "जी उठने की शक्ति"- पौलुस इस शक्ति को थोड़ा बहुत जानता था। यह उस ज्ञान से ज़्यादा है जो ज़्यादातर लोगों को है (कुल. 1:29)। लेकिन वह इस से भी ज़्यादा अनुभव करना चाहता था। तुलना कीजिए इफ़ि. 1:19-20; 3:20; रोमि. 6:4.

"उनकी मौत की समानता"- 2:8 मसीह की मौत का मतलब था पूरी दीनता, बात मानना और याहवे की इच्छा पर अपने आप को छोड़ देना। इस अनुभव को पौलुस अपने आप में और अधिक चाहता था। तुलना करें 2 कुरि. 4:10-12; गल. 2:20.

"उनके दुखों की सहभागिता"- 1:29; कुल. 2:2-4; रोमि. 8:17. दूसरे बहुत से लोगों से अधिक उसने दुख सहा था - 2 कुरि. 11:23-29. वह इस से अधिक चाह रहा था। वह यह जानता था कि यीशु की देह (मण्डली) में गहरी संगति लेने के लिए उनके दुखों में हिस्सेदार होना ज़रूरी है। वह यह भी नहीं चाह रहा था कि किसी तरह इस से बचा जा सकता है (जैसा कुछ लोग सोचते हैं)। कुल. 1:24 देखिए। पौलुस ने जीवन में मसीह को एक बार दुःख दिया था, प्रे.काम 9:4-5. वह मसीह के क्लेशों में भागीदार बनना चाहता था, जो तब तक है, जब तक उनके लोग इस संसार में हैं। यीशु मसीह के जी उठने की शक्ति में हिस्सेदार होने का मतलब होता है, उनके दुखों में भी भाग लेना। यीशु की तकलीफ़ों में भाग लेने का मतलब है उनकी शान्ति और आराम में भी भाग लेना (2 कुरि. 1:5-7; यूहन्ना 16:33) और इस पृथ्वी के बाद जो कुछ उनका है, उसे भी हासिल करना (रोमि. 8:17)।

"ताकि मैं...सहभागिता जानूँ"- पद 8 पौलुस यह चाहता था, कि यीशु को बेहतर तरीके से जानें। वह एक ऐसे ज्ञान की बात करता है, जो व्यक्तिगत अनुभव से मिलता है न कि वह दिमागी ज्ञान जो उनके बारे में पढ़ने से मिलता है। तुलना करें 2 पतर. 3:18.

3:11 "मरे हुओं में से जी उठने की हालत"- इसका मतलब है कुछ जिलाए जाते हैं, और कुछ नहीं। दूसरे शब्दों में यहाँ वह विश्वासियों के जिलाए जाने की बात कह रहा है। (1 कुरि. 15:50-54; 1 थिस्स. 4:14-17; प्रका. 20:5)। लेकिन क्या इस जी उठने को "हासिल" - किया जा सकता है? क्या पौलुस को इस बारे में कोई शक था? कोई कारण नहीं है कि हम शक करें, कि ऐसा था - 3:21; 1:6; रोमि. 5:8-9; 8:38-39; 2 कुरि. 5:1-2; 2 तीमु. 4:18. किन्तु उसे यह मालूम था, कि विश्वासियों का जी उठना विश्वास के जीवन के अन्त में था और यह कि आवश्यक था कि मसीह का चुनाव किया जाए, लगातार किया जाए और अन्त तक विश्वास करते रहें। कुल. 1:23; इब्रा. 3:6,14. यीशु के ज्ञान और सहभागिता में बढ़ते जाने, उनकी तरह होते जाने से यह निश्चित हुआ, कि यह उसके जीवन की दिशा होगी। इस तरह के विश्वास में बने रहना इस इब्रानियों की पत्री का एक बड़ा विषय है। (यह बाईबल का भी एक बड़ा विषय है)।

3:12 "यह...है"- पद 10 वह मसीह की सामर्थ और सहभागिता के विषय कुछ जानता था। परन्तु उसे पूरी तरह अनुभव कर पाना संभव नहीं था।

"सिद्ध"- यह उसका लक्ष्य तो था, लेकिन अब तक अनुभव नहीं बना था। मत्ती 5:48 में 'सिद्ध' पर नोट्स देखें। फ़िलिप्पी में शायद कुछ ऐसे लोग थे, जो किसी तरह की सिद्धता की कोशिश कर रहे थे। और दूसरे लोगों को नीचा समझ रहे थे (पौलुस की चिट्ठियों में वह सब कुछ हुआ करता था, जो वहाँ के लोगों की आत्मिक ज़रूरत हुआ करती थी)। अगर वहाँ सिद्धता की बात करने वाले लोग थे, तो वह उन से यह कहना चाहता था, कि वह खुद अभी तक सिद्ध नहीं है। यदि महान प्रेरित पौलुस सिद्ध नहीं बन पाया था, हमें जान लेना चाहिए कि हम भी नहीं बने हैं।

"आगे बढ़ता जाता हूँ"-इब्रा. 6:1,11,12.

हासिल कर सकूँ, जिसके लिए मसीह यीशु ने मेरा चुनाव किया है। 13भाइयो-बहनो, मैं यह नहीं समझता कि मैं यह हासिल कर चुका हूँ। लेकिन एक काम करता हूँ: पुरानी बातों को भूलकर आगे की बातों की ओर चला जा रहा हूँ। 14मैं मसीह यीशु में परमेश्वर की ऊपरी बुलाहट के ईनाम के लिए निशाने की तरफ़ बढ़ता हूँ।

15इसलिए हम में जो अच्छी समझदारी रखते हैं, यही मन रखें। यदि किसी विषय में तुम्हारा सोचना कुछ और है, तो परमेश्वर उसे तुम पर प्रगट करेंगे। 16किसी भी हालत में, हम ने जिस माप से हासिल किया है, उसी नियम से हम जीवन जिएँ और एक ही मन के रहें।

17भाइयो-बहनो, हम तुम्हारे लिए एक नमूना हैं इसलिए दूसरों के साथ मिलकर मेरी तरह जीवन जियो और उन्हें भी देखते रहो जो ऐसा करते हैं। 18बहुत से लोग मसीह के क्रूस के दुश्मन की तरह जीवन जी रहे हैं। अक्सर मैंने उनके बारे में तुम्हें बताया है और अभी रोते हुए कहता

"हासिल कर सकूँ"- वह वही बनना चाहता था जो मसीह ने उसे बनाने के लिए बुलाया था। वह इतना पवित्र, दीन आज्ञाकारी, प्रेमी और फलदायक बनना चाहता था, जितना एक विश्वासी के लिए पृथ्वी पर संभव था। वह अपनी आत्मिक हालत से खुश नहीं था। पुरानी जिन सफ़लताओं को उसने हासिल किया था, उन से भी वह सन्तुष्ट नहीं था। वह मसीह को और अधिक चाहता था।

3:13 "एक काम करता हूँ"- उसका हृदय बँटा हुआ नहीं था, उसका मन आत्मिक बातों के लिए दुचित्ता नहीं था। (याकूब 1:8 से तुलना करें)।

"भूलकर"- इसका मतलब स्मृति से बिल्कुल बाहर निकाल देना नहीं है। ऐसा शायद ही हमारे लिए हो सकता है। पौलुस का कहना है कि वह जानबूझकर पुरानी बातों को भूलता जाता था। उसके लिए आने वाली / होनेवाली बातें ज़्यादा ज़रूरी थी। पुरानी सफ़लताओं और असफ़लताओं को छोड़कर वह आगे बढ़ते रहना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि उसकी पुरानी असफ़लता उसे मायूस करे और सफ़लता आलसी बना दे।

"आगे की..ओर चला जा रहा"- जिस तरह से एक दौड़ने वाला बहुत कोशिश और मेहनत करता है उसी बात को यह शब्द दिखाता है।

3:14 "ईनाम"- वह इनाम क्या है, नहीं बताता है। वह जानता है कि यह एक बड़ा इनाम होगा - जितना सृष्टिकर्ता बना सकते हैं - इनाम (पुरस्कार) के बारे में मत्ती 5:12; 10:41-42; 16:27; 1 कुरि. 3:8,14; इब्रा. 10:25; प्रका. 11:18; 22:12 में देखें।

"निशाने"-1 कुरि. 9:24-27; प्रे.काम 20:24 देखिए।

"निशाने...हूँ"- पद 20; इब्रा. 3:1.

3:15 "समझदारी"- 1 कुरि. 2:6; इफ़ि. 1:13-15; कुल. 1:28; 4:12; इब्रा. 5:14; 6:1. सिद्धता का मतलब पौलुस की निगाह में निर्दोषता या बिना खोट के होना नहीं था-पद 12. लेकिन उसे मालूम था कि वह एक समझदार विश्वासी था। मसीह में आत्मिक तरीके से बढ़ चुका था। सिद्धता के बारे में जो उसके विचार थे, वही सभी मसीह के शिष्यों के होने चाहिए। पौलुस यह जानता था कि ऊपर के पदों में 'सिद्धता' के विषय उसकी शिक्षा, स्वर्गिक पिता की तरफ़ से ज्ञान था और वह चाहता था कि वह उसकी आँखों को खोलें ताकि वे सच्चाई को जान सकें (1:9-10)। उसे मालूम था कि उसकी बिनती सुनी जाएगी।

3:16 इसी ज्ञान को नींव बनाकर शिष्यों को अपना जीवन जीना चाहिए यदि वे ऐसा करेंगे, तो सर्वशक्तिमान प्रभु सच्चाई को जानने के लिए उनको समझा देंगे।

3:17 "नमूना"- प्रे.काम 20:18 में नोट्स और संदर्भों को देखें। पौलुस ने सिर्फ़ यह नहीं दिखाया कि उनका चालचलन कैसा हो, उसने वैसा कर के दिखाया।

"देखते रहो"- पद 2; रोमि. 16:17.

3:18 "रोते हुए"- प्रे.काम 20:31. पौलुस रोता था। क्योंकि बहुत से लोग जो यह दावा करते थे कि उनक विश्वास मसीह में है, वे अपने कर्मों द्वारा सिद्ध कर देते थे कि वे मसीह के शत्रु हैं। ऐसा लगता है कि जब भी एक स्थानीय कलीसिया शुरू होती थी, क्रूस के ऐसे दुश्मन जल्द ही उजागर हो जाते थे - प्रे.काम 20:29-30; रोमि. 16:17; 2 कुरि. 11:13-15; गल. 1:7; 6:12; कुल. 2:8,16; 2 तीमु. 3:1-7; 4:1-5. वे धार्मिकता तो दिखाते थे परन्तु उसकी सामर्थ का इन्कार करते थे।-1 तीमु. 3:5.

हूँ। 19उनका अन्त बर्बादी है। उनका ईश्वर उनका पेट है। अपनी शर्मनाक बातों पर उन्हें घमण्ड है। उनका सारा ध्यान दुनिया की बातों पर लगा हुआ है। 20लेकिन हमारी नागरिकता स्वर्ग की है। वहीं से हमें प्रभु यीशु मसीह के आने का इन्तज़ार है। 21वह हमारी नाश होने वाली देह को बदलेंगे, ताकि यह उनकी तेज भरी देह के समान हो जाए। ऐसा यीशु अपनी उस शक्ति से करेंगे, जो उन्हें सब वस्तुओं को अपने वश में करने के लायक बनाती है।

4 इसलिए मेरे प्यारे भाइयो-बहनो, जिन में मेरा जी लगा रहता है और जो मेरा आनन्द और मुकुट हो, यीशु में स्थिर रहो।

2मैं यूओदियो और सुन्तुखे से यह बिनती करता हूँ कि वे मसीह में एक मन की बनी रहें। 3मेरे सच्चे साथी, मैं यह बिनती करता हूँ कि तुम इन महिलाओं की मदद करो, जिन्होंने खुशी का समाचार (सुसमाचार) दिए जाने के काम में मेरे साथ मेहनत की। जिस प्रकार से क्लॅमन्ट और दूसरे कार्यकर्ताओं ने भी, जिनके नाम जीवन की किताब में हैं, मेहनत की थी। 4यीशु में

3:19 "बर्बादी"- मत्ती 7:13; यूहन्ना 17:12; रोमि. 9:22; 2 थिस्स. 1:9.

"पेट"- यहाँ पर इस्तेमाल हुआ शब्द शायद शरीर (देह के उस जीवन के बारे में है जो आत्मिक जीवन के बिलकुल उल्टा है) रोमि. 7:5. कुछ लोग इसी ईश्वर (देह की इच्छाओं से चलना) की उपासना करते हैं। वे झूठ बोलने, धोखा देने और चुराने में पीछे नहीं हटते। वे कहते तो हैं, कि मसीह के पैरोकार हैं, लेकिन अपनी अभिलाषाओं के हिसाब से जीते हैं - रोमि. 16:18; 1 तीमु. 6:5; 2 पतर. 2:3. वे हमेशा अपने पेट को भरना चाहते हैं, परमेश्वर की आत्मा से भरपूरी का उन्हें कोई लेना देना नहीं।

"शर्मनाक"- अपनी भयानक आत्मिक अज्ञानता में वे उन बातों पर घमण्ड करते हैं, जिनमें उन्हें शर्म आनी चाहिए। तुलना कीजिए 1 कुरि. 5:1-2,6; 2 पतर. 2:18; यहूदा 16; भजन 10:3; 52:1. जिस सम्मान को पौलुस कचरा कहता है, वही उनके पास है।

"दुनिया की बातों"- रोमि. 8:5-8 आत्मिक बातों के लिए उनके भीतर इच्छा नहीं है, सिर्फ़ दुनियाँ की बातों के लिए है चाहे वे जितना भी उन सब के बारे में कहे या संदेश दे। धन, सम्पत्ति, आदर, यश, देह की इच्छाओं का पूरा होना-इन्हीं से उन्हें लगाव है और इन्हीं के पीछे हैं।

3:20 यीशु के मानने वाले इस दुनिया में हैं, लेकिन वे इस दुनिया के नहीं हैं। यूहन्ना 17:6,11,14,15. उनका शहर और देश ऊपर है - इब्रा. 11:10,16; 13:14; गल. 4:26. वे स्वर्ग के हैं। उनकी आशाएँ और इच्छाएँ वहीं पर टिकी हुयी हैं। याहवे उन लोगों के राजा हैं। वे अपने मुक्तिदाता के आने के इन्तज़ार में हैं - प्रे.काम 1:11; 1 थिस्स. 4:14-18; इब्रा. 9:28.

3:21 "बदलेंगे"- 1 कुरि. 15:50-53.

"तेज...देह"- 1 कुरि. 15:42-44,49; 1 यूहन्ना 3:2; रोमि. 8:23-25.

"लायक"- 1 कुरि. 15:24-25; इब्रा. 2:4; इफ़ि. 1:9.

4:1 "जी लगा रहता"- 1:7-8.

"आनन्द और मुकुट"- 2:16; 1 थिस्स. 2:19- उस समय वे उसकी खुशी थे, लेकिन बाद में खुशी और ताज दोनों।

"स्थिर रहो"-इफ़ि. 6:11,13,14; आदि।

4:2 हमें नहीं मालूम कि ये दोनों स्त्रियाँ कौन थीं, लेकिन उनके झगड़ों से पौलुस परेशान था। उसने गुहार लगायी कि झगड़ना बन्द करें। तुलना करें 2:12. वह यह अच्छी तरह से जानता था, कि झगड़े-फ़साद शिष्यों में कैसा तहलका मचा सकते हैं। 1 कुरि. 1:10-13; 3:3-4.

4:3 "सच्चे साथी"- नहीं मालूम कि यह कौन व्यक्ति था। ऐसा लगता है कि पौलुस ने उस पर भरोसा किया, कि वह झगड़ा निबटा सकता है।

"जीवन की किताब"- निर्ग. 32:32; भजन 69:28; 139:16; लूका 10:20; प्रका. 3:5; 20:12-15. पौलुस कैसे जानता था कि उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं? उनके कामों को देखकर और बातों को सुनने से। 1 थिस्स. 1:4-10 से मिलान करें।

4:4 3:1 और नहे. 8:10 देखिए.

सदा खुश रहो, मैं फिर कहता हूँ, खुश रहा
करो। 5तुम्हारी सज्जनता को सभी लोग
देख सकें। यीशु अचानक आएँगे (उनका
आना नज़दीक है)। 6किसी भी प्रकार की
चिन्ता न किया करो, लेकिन हर तरह
के हालात में तुम्हारी बिनतियाँ धन्यवाद
के साथ परमेश्वर पिता के सामने लायी
जाएँ। 7तब परमेश्वर पिता की शान्ति,
जिसे समझा नहीं जा सकता, तुम्हारे दिल
(हृदय) और विचारों को मसीह यीशु में
संभालेगी।

8अन्त में भाइयो-बहनो, जो कुछ सच
है, जिन बातों में ईमानदारी है, इन्साफ़ है,
जो बातें शुद्ध, प्यारी और सुनने में अच्छी
हैं, उन पर ध्यान लगाओ। यदि कोई भली
और तारीफ़ के लायक बात है, उसी पर
मनन करो। 9जो कुछ तुम ने मुझ से सीखा,
अपनाया, सुना और मुझ में देखा है, वही

4:5 "सज्जनता"- 2 कुरि. 10:1; 1 तीमु. 3:3; याकूब 3:17.

"यीशु अचानक आएँगे"- इसका मतलब हो सकता है कि अभी वह यीशु के मानने वालों के नज़दीक हैं (भजन 145:18; मत्ती 28:20; इब्रा. 13:5)

4:6 यहाँ हमारे लिए स्वर्गिक पिता का रास्ता है। जीवन के सभी हालातों में मन के अन्दर की शान्ति (यीशु की इच्छा के खिलाफ़ जाने में उनकी शान्ति लोप हो जाती है)।

"किसी भी प्रकार की"- हमें बहुत कठिन और डरा देने वाली हालत में भी चिन्तित नहीं होना चाहिए। यदि हम मसीह के शिष्य हैं, याहवे हमारे भीतर हैं, पास में हैं, चारों तरफ़ हैं, हमारे समझने के साथ भी हैं। वह हमारे पिता हैं जो हमारी योग्यता से कहीं अधिक प्यार करते हैं। हमारे लिए असीमित शक्ति का इस्तेमाल करते हैं। हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम अपनी चिन्ताएँ भरोसे के साथ उन पर डाल दें और उनके वायदों पर तकिया करें - 1 पतर. 5:8 तरह की प्रार्थनाएँ हैं। उन में से कुछ के बारे में पौलुस यहाँ बताता है।

"चिन्ता"- चिन्ता यह दिखाती है कि याहवे पर भरोसा और उनकी सच्चाई की सही समझ कमज़ोर है। फ़िक्र और ईमान, तेल और पानी की तरह है। वे कभी एक नहीं होते। मत्ती 6:25-34 देखिए।

"धन्यवाद के साथ"- उत्पत्ति 18:32; लैव्य. 7:12-13; भजन 7:17; 50:14-15; इफ़ि. 6:18; 1 थिस्स. 5:17-18; इब्रा. 13:15; क्या हम इस बात की कल्पना कर सकते हैं, कि बिना धन्यवाद की प्रार्थना किए दूसरी प्रार्थनाएँ कामयाब होंगे। क्या धन्यवाद नहीं देने से हमारे भीतर में चिन्ताएँ नहीं आती हैं?

"बिनतियाँ...सामने"- लोगों से नहीं, देखिए मत्ती 7:11.

4:7 परमेश्वर की शान्ति का मतलब वह शान्ति जो वह देते हैं। यह उनकी अपनी शक्ति के समान है। याहवे किसी बात के लिए चिन्तित नहीं होते हैं। याहवे पिता के लिए दिया गया जीवन और विश्वास, हमारे जीवन में शान्ति पैदा करता है।- यशा. 26:3. यूहन्ना 14:1,27; 16:33; कुल. 3:15. यह शान्ति उस 'आराम' की तरह है, जिसका वायदा मत्ती 11:28-30 में किया गया है। यीशु के लोगों को ऐसी हालत में शान्ति मिल सकती है जो दूसरे लोग कभी हासिल नहीं कर सकते। वे यह भी नहीं जान सकते कि उन्हें यह कैसे मिलती है। उनके मन और दिमाग के दरवाजों पर यह शान्ति एक सुरक्षाकर्मी की तरह रहती है। तभी हमारा दिल हर तरह की फ़िक्रों और चिन्ताओं से मुक्त रह सकेगा।

4:8 "उसी पर मनन करो"- हमारे आत्मिक जीवन का हमारे दिमाग या सोचने विचारने का बड़ा सम्बन्ध है। उन्हीं पर हमारे काम निर्भर होते हैं। उनका लगातार नवीनीकरण ज़रूरी है - रोमि. 12:2. उनके ख्याल आसमानी बातों पर होने चाहिए। देखें भजन 1:1-2. बुरी बातें, बुनियादी बातें हमारे बुरे स्वभाव को आकर्षित करती हैं। गल. 5:16-17. यदि हम ऐसी बातों पर अपना सोच विचार रखेंगे, तो हमें उनकी इच्छा होगी। यदि हमारे विचार हमेशा सच्ची, पवित्र और अच्छी बातों पर टिके रहेंगे तो हम आसानी से बुरी इच्छाओं को रद्द कर पाएँगे। हमें सावधान होना चाहिए कि हम क्या पढ़ते हैं, क्या देखते हैं, कैसा संगीत सुनते हैं या कैसी कल्पनाएँ करते हैं जो हम यीशु के लोगों के लायक नहीं है, तो इसका असर हमारे बर्ताव और कामों पर होगा।

करो और शान्ति देने वाले परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेंगे।

10मैं यीशु में बहुत खुश हूँ कि अब तुम मुझ में फिर से दिलचस्पी दिखाने लगे हो। इसके पहले तुम्हें मेरा ख्याल तो था लेकिन मौका नहीं मिला था। 11यह नहीं कि मैं तुम्हें अपनी ज़रूरतें बतला रहा हूँ। लेकिन मैंने सीख लिया है, कि जैसी हालत में हूँ, सन्तोष रखूँ। 12कमी हो या बहुतायत, दोनों ही अनुभव मेरे पास हैं। हर जगह और हर बात में मुझे यह सिखाया गया है, कि भरपेट कैसे रहूँ और भूख कैसे सहन करूँ। भरपूरी का आनन्द कैसे लूँ और ज़रूरत न पूरी होने की पीड़ा को कैसे सहूँ। 13यीशु जो मुझे शक्ति देते हैं, उनकी मदद से मैं हर हालत में रह सकता हूँ।

14फिर मैं खुश हूँ कि तुम मेरी मुसीबत में हिस्सेदार बने। 15तुम फ़िलिप्पी की मण्डली के लोग, तुम्हें यह मालूम है कि सुसमाचार की शुरूआत में, जब मैं मकिदुनिया छोड़ने पर था, देने और लेने के बारे में तुम लोगों को छोड़कर किसी और ने मेरी मदद नहीं की थी। 16जब मैं थिस्सुलुनीके में था, तब भी बार-बार तुम ने मेरी ज़रूरतों को पूरा किया था। 17मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि मैं सहयोग (दान) का भूखा हूँ। मैं यह चाहता हूँ कि तुम्हारे खाते में बहुतायत से जमा हो। 18मेरे पास अधिकाई से सब कुछ है। इपफ्रुदितुस के हाथ से जो कुछ तुम ने भेजा, उसको पाकर मैं भरा-पूरा हूँ। वे चीजें खुशबूदार इत्र, परमेश्वर को खुश करने वाली और ग्रहण योग्य कुर्बानी हैं। 19मेरे परमेश्वर, मसीह यीशु अपनी महिमा

4:9 "शान्ति...परमेश्वर"- रोमि. 15:33; 16:20; 1 थिस्स. 5:23; इब्रा. 13:20. यदि हमारे पास शान्ति के पिता हैं, तभी हमें परमेश्वरीय शान्ति मिल सकती हैं - पद 17.

4:10 "खुश"- 1:4-5 वह खुद के लिए इसलिए खुश नहीं था कि उसे कुछ मिला। वह खुश था, यह अपने आप में स्वर्गिक पिता की तरफ़ से एक इनाम था-पद 17. जो लोग हमें देते हैं, उनके तरफ़ हमारा यही रवैया होना चाहिए।

4:11-12 1 तीमु. 6:6-8; इब्रा. 13:5; लूका 3:14 । इस पृथ्वी पर सचमुच में अमीर कौन है? वही जो अपने पास जो है, उसमें प्रसन्न है। सन्तोष करना, पौलुस ने सीखा था, वह स्वभाव से ऐसा नहीं था। सन्तोष और परमेश्वर की शान्ति के साथ-साथ उनके संग रहता है जो भरोसा रखने वालों के मन को सुरक्षा देती है। कुछ स्थितियों, जिनमें पौलुस ने रहना सीखा, वे 2 कुरि. 4:8-9; 6:4-10; और 11:23-27 में हैं। वह यह चिट्ठी किसी महल से नहीं लेकिन जेल में से लिखता है- 1:12-13. कुछ मसीही लोगों के मन में धन, सम्पत्ति और शान शौकत की चीज़ों को बटोरने की इच्छा है, जो वचन के खिलाफ़ है और हमारे भीतर के नए जीवन के लिए खतरनाक हैं।

4:13 "शक्ति देते हैं"- भजन 73:26; यशा. 40:31; 2 कुरि. 12:8,10. हर एक मसीह के शिष्य को वह सब सीखना चाहिए, जो पौलुस ने सीखा था। विश्वासी को यह नहीं सोचना चाहिए कि उस से कुछ हो नहीं सकता।

"उनकी (यीशु) मदद से"- रोमि. 8:37; 2 कुरि. 2:14; 3:4-6; इफ़ि. 1:19; 3:20 पौलुस का भरोसा अपनी ताकत में नहीं था, न ही आत्म संयम और अनुशासन पर (हालाँकि इन सब का अभ्यास उसको था - 1 कुरि. 9:25-27)।

"हर हालत- वह महसूस करता था, कि किसी भी परिस्थिति, काम और चुनौती का सामना वह शान से कर सकता था।

4:14-16 देखें 1:5 देने के बारे में वे एक नमूना वाली कलीसिया थी। 2 कुरि. 8:1-5 भी देखें।

4:16 "थिस्सुलुनीके"- प्रे.काम 17:1.

4:17 पद 10

4:18 "खुशबूदार"- यूहन्ना 12:3; मत्ती 26:10; लैव्य. 1:9; 2:2; आदि से तुलना कीजिए।

"कुर्बानी"-2:17; इब्रा. 13:16.

4:19 उन्हों ने पौलुस की ज़रूरतों को पूरा किया था - पद 18. ऐसा उन्हों ने अपनी कमी में किया था। - 2 कुरि. 8:2. स्वर्गिक पिता अपनी अधिकाई के खज़ाने से उनकी जरूरतें पूरी करने वाले थे। यहाँ एक सूत्र या सिद्धान्त है जिसका अभ्यास हम सभी को करना चाहिए। देखें लूका 6:38; 2 कुरि. 9:6-8.

में धन-सम्पत्ति के अनुसार ही तुम्हारी ज़रूरतों को पूरा करें।

20 अब हमारे परमेश्वर पिता को बड़ाई और आदर (महिमा) सदा काल तक मिलता रहे। ऐसा ज़रूर हो।

21 मसीह के प्रत्येक पवित्र जन और मेरे साथ जो भाई लोग हैं, वे भी इस में शामिल हैं। 22 सभी पवित्र लोग तुम सभी को और विशेष कर कैसर के परिवार के लोगों को सलाम कहते हैं।

23 स्वामी यीशु मसीह की कृपा तुम सभी पर बनी रहे। ऐसा ही हो।

"धन-सम्पत्ति"- रोमि. 2:4; 9:23; इफ़ि. 1:7,18; 2:7; 3:8,16. क्या यीशु के मानने वालों को बेचैन होना चाहिए, कि सृष्टिकर्ता उनकी ज़रूरतों को पूरा कर पाएंगे या नहीं? बिल्कुल नहीं-पद 6; मत्ती 9:29. यदि वह ज़रूरी है, कि लोगों के सामने हाथ फैलाया जाए, परमेश्वर लोगों के लिए खुद कर सकते हैं। वह लोगों के मनों को उभार सकते हैं, कि वे विश्वासियों की मदद करें। हमें यह चाहिए कि सब कुछ उनके सुपुर्द करें और उनके ऊपर छोड़ दें। हमें यह कल्पना भी नहीं करनी चाहिए कि प्रभु कुछ कर नहीं सकते या नहीं करेंगे। गिनती 11:23 देखें।

"तुम्हारी ज़रूरतों"- वह सब नहीं, जो हम चाहते हैं, लेकिन वह सब जिसकी हमें ज़रूरत होती है। मत्ती 6:33; 7:9-11; भजन 23:1; 37:25. परमेश्वर हमारी आत्मिक ज़रूरतों को भी पूरा करते हैं - पद 23; इफ़ि. 1:3; 3:16-20.

4:20 रोमि. 16:27 आदि.

4:21 "पवित्र जन(सन्त)" - रोमि. 1:7.

4:22 "कैसर के परिवार"- 1:13. शायद वह उन लोगों की ओर इशारा कर रहा है जो राजघराने या सरकार में सेवारत हैं।

"सलाम"- रोमि. 1:7; 16:20. इसी तरह से हमारी ज़रूरते पूरी होती हैं।